



॥ श्री गंगा माता की पावन कथा ॥
॥ ॐ जय गंगे माता ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री गंगा माता की पावन कथा ॥

मंगलाचरण

॥ ॐ श्री गङ्गायै नमः ॥

वन्दे विष्णुपदोद्भूतां शिवजटाविहारिणीम्।
भागीरथ्यै नमस्तुभ्यं त्रैलोक्यपावनीं शिवाम्॥

श्री गंगा माता की कथा

सनातन धर्म में माँ गंगा को केवल एक नदी नहीं, बल्कि दिव्य देवी, मोक्षदायिनी, पतित-पावनी और त्रिभुवन को पवित्र करने वाली शक्ति माना गया है। उनके जल का स्पर्श मात्र पापों का नाश करने वाला तथा मन, वचन और कर्म को शुद्ध करने वाला माना गया है। पुराणों में वर्णित है कि माँ गंगा का अवतरण केवल पृथ्वी को जल देने के लिए नहीं, बल्कि असंख्य जीवों के उद्धार और धर्म की स्थापना के लिए हुआ।

भगवान विष्णु से गंगा का प्राकट्य

पुराणों के अनुसार, भगवान वामन ने जब तीन पगों में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नापा, तब उनके चरणों के स्पर्श से दिव्य जल प्रकट हुआ। ब्रह्माजी ने उस पावन जल को अपने कमण्डलु में धारण किया। यही दिव्य धारा आगे चलकर गंगा के रूप में प्रसिद्ध हुई। इसलिए उन्हें विष्णुपदी भी कहा जाता है।

राजा सगर और उनके पुत्र

सूर्यवंश के प्रतापी राजा सगर के साठ हजार पुत्र थे। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ आरम्भ किया। देवराज इन्द्र ने यज्ञ का अश्व चुराकर महर्षि कपिल के आश्रम के समीप बाँध दिया। राजा सगर के पुत्र घोड़े की खोज करते हुए वहाँ पहुँचे और बिना विचार किए महर्षि कपिल पर आरोप लगाने लगे। महर्षि कपिल के तपोबल से क्रोधित दृष्टि पड़ते ही सभी साठ हजार पुत्र तत्काल भस्म हो गए। उनकी आत्माएँ मोक्ष से वंचित रहीं।

भागीरथ का महान तप

राजा सगर के वंश में अनेक पीढ़ियों के बाद राजा भागीरथ का जन्म हुआ। उन्होंने अपने पूर्वजों के उद्धार का संकल्प लिया। वे हिमालय में जाकर वर्षों तक कठोर तपस्या करने लगे। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए।

भागीरथ ने प्रार्थना की—

"हे प्रभु! माँ गंगा को पृथ्वी पर भेजिए ताकि उनके पवित्र जल के स्पर्श से मेरे पूर्वजों का उद्धार हो सके।"

ब्रह्माजी ने कहा कि गंगा का वेग अत्यंत प्रचण्ड है। पृथ्वी उनके वेग को सहन नहीं कर पाएगी। इसलिए भगवान शिव को प्रसन्न करना आवश्यक होगा।

भगवान शिव ने गंगा को धारण किया

भागीरथ ने भगवान शिव की कठोर आराधना की। शिवजी प्रसन्न हुए और बोले—

"हे राजन्! मैं गंगा के वेग को अपनी जटाओं में धारण करूँगा।"

जब माँ गंगा स्वर्ग से पृथ्वी की ओर उतरीं तो वे अपने वेग पर गर्व कर रही थीं। भगवान शिव ने उन्हें अपनी विशाल जटाओं में समाहित कर लिया। गंगा अनेक समय तक उन्हीं जटाओं में बँधी रहीं।

भागीरथ ने पुनः शिवजी की स्तुति की। तब शिवजी ने अपनी जटाओं से गंगा की एक धारा पृथ्वी पर प्रवाहित की। इस कारण भगवान शिव गंगाधर कहलाए।

जाह्नवी नाम की प्राप्ति

भागीरथ के पीछे-पीछे बहती हुई गंगा महर्षि जाह्नु के आश्रम से होकर गुज़रीं। उनके वेग से आश्रम प्रभावित हुआ। महर्षि ने क्रोध में सम्पूर्ण गंगा जल को अपने कमण्डलु में समाहित कर लिया (कुछ कथाओं में उन्हें पी जाने का वर्णन मिलता है)।

देवताओं और भागीरथ की प्रार्थना पर उन्होंने अपने कान (या जंघा) से गंगा को पुनः प्रवाहित किया। तभी से गंगा जाह्नवी नाम से भी प्रसिद्ध हुई

सगर पुत्रों का उद्धार

भागीरथ के मार्गदर्शन में गंगा उस स्थान पर पहुँचीं जहाँ राजा सगर के पुत्रों की भस्म पड़ी थी। गंगा के पवित्र जल के स्पर्श से उन सभी को मोक्ष प्राप्त हुआ। उसी दिन से गंगा को भागीरथी भी कहा जाने लगा।

गंगा की महिमा

शास्त्रों में कहा गया है कि—

गंगा स्नान से तन और मन की शुद्धि होती है।

श्रद्धा से गंगा जल का आचमन और पूजन करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

गंगा तट पर जप, तप, दान और पितरों का तर्पण अत्यंत फलदायी माना गया है।

गंगा दशहरा, गंगा सप्तमी, कार्तिक पूर्णिमा, मकर संक्रांति और अमावस्या के अवसर पर गंगा स्नान का विशेष महत्व है।

अंतिम समय में गंगाजल का स्मरण या स्पर्श भी अत्यंत शुभ माना गया है।

कथा का संदेश

माँ गंगा की कथा हमें सिखाती है कि सच्ची श्रद्धा, तप, धैर्य और निस्वार्थ संकल्प से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। राजा भागीरथ का प्रयास आज भी किसी महान और कठिन कार्य के लिए "भागीरथ प्रयत्न" के रूप में प्रसिद्ध है।

यह कथा हमें यह भी प्रेरित करती है कि नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और आस्था की धरोहर हैं। इसलिए उनका संरक्षण और स्वच्छता बनाए रखना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है।

समापन प्रार्थना

हे माँ गंगे!

आप हमारे जीवन को अपने पावन जल के समान निर्मल बनाइए। हमारे पाप, दुःख और अज्ञान का नाश कर हमें सत्य, धर्म, करुणा और भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दीजिए। आपके चरणों में हमारी अटूट श्रद्धा बनी रहे और समस्त प्राणियों के कल्याण का भाव हमारे हृदय में सदैव जागृत रहे।

॥ ॐ श्री गङ्गायै नमः ॥